



भारत का फार्मा उद्योग

प्रलिमिंस के लिये:

[फार्मास्यूटिकल, धारा 3 \(d\), पेटेंट अधिनियम, 1970, जेनेरिक दवा, जैव परीदयोगिकी कषेत्र, सक्रिय फार्मास्यूटिकल सामग्री \(API\), उत्पादन आधारित प्रोत्साहन \(PLI\) योजना, बलक ड्रग पार्क योजना का प्रचार, गुड मैनयुफैक्चरिंग प्रैक्टिस \(GMP\), आवश्यक दवाओं की राष्ट्रीय सूची \(NLEM\), mRNA वैक्सीन।](#)

मेन्स के लिये:

भारत के फार्मास्यूटिकल उद्योग में अवसर और चुनौतियाँ।

[स्रोत: फाइनेंसियल एक्सप्रेस](#)

चर्चा में क्यों?

इंडियन [फार्मास्यूटिकल एलायंस \(IPA\)](#) ने [रेसिप्रोकल अमेरिकी टैरिफ](#) को रोकने और अमेरिकी फार्मास्यूटिकल बाज़ार में भारत का प्रभुत्व बनाए रखने के लिये अमेरिकी दवा आयात पर [शून्य सीमा शुल्क](#) का प्रस्ताव दिया है।

IPA शून्य आयात शुल्क की वकालत क्यों कर रहा है?

- अमेरिकी बाज़ार का महत्त्व: अमेरिका भारत से प्रतिवर्ष 9 बिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य के फार्मास्यूटिकल फॉर्मूलेशन का आयात करता है, जो भारत के कुल फार्मा निर्यात का एक तिहाई है।
- शून्य आयात शुल्क: भारत ने जीवन रक्षक दवाओं पर आयात शुल्क को कम कर दिया है। शून्य शुल्क नीति [रेसिप्रोकल अमेरिकी टैरिफ](#) का मुकाबला करने और निर्यात की सुरक्षा करने में मदद करती है।
 - न्यूनतम शुल्क से व्यापार संबंध मज़बूत होंगे और भारतीय फार्मा कंपनियों के खिलाफ अमेरिका के सख्त उपायों को रोका जा सकेगा, जैसे भारत के [पेटेंट अधिनियम, 1970](#) में संशोधन कर उसकी [धारा 3\(d\)](#) को सरलीकृत करना।
- [पेटेंट अधिनियम, 1970](#) में संशोधन: अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों ने भारत से [पेटेंट अधिनियम, 1970](#) की [धारा 3\(d\)](#) को हटाने या सरलीकृत करने का आग्रह किया है, जो पेटेंटों की एवरग्रीनिंग को रोकता है।
 - संशोधित औषधियों के पेटेंट को आसान बनाने के लिये [धारा 3\(d\)](#) में संशोधन (पेटेंट की एवरग्रीनिंग) से भारतीय फार्मा कंपनियों को [रिवर्स इंजीनियरिंग](#) पर प्रतिबंध लगने और [जेनेरिक दवाओं](#) उत्पादन में विलंब होने का खतरा हो सकता है।

भारत के फार्मास्यूटिकल उद्योग की स्थितिक्या है?

- **परिचय:** भारत विश्व स्तर पर औषधि उत्पादन में मात्रा के आधार पर तीसरे स्थान पर है तथा मूल्य के आधार पर 14वें स्थान पर है, तथा वैश्विक वैक्सीन मांग का 50% से अधिक तथा अमेरिका में जेनेरिक दवाओं की 40% आपूर्ति करता है।
- **आकार:** वित्त वर्ष 2023-24 के लिये भारत का फार्मास्यूटिकल बाज़ार 50 बिलियन अमेरिकी डॉलर का है, जो सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 1.72% का योगदान देता है, और वर्ष 2030 तक 130 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँचने का अनुमान है।
 - भारत का [जैव परीदयोगिकी कषेत्र](#), जिसका मूल्य वर्ष 2022 में 137 बिलियन अमेरिकी डॉलर का है, का लक्ष्य वर्ष 2030 तक 300 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँचना है।
- **प्रमुख खंड:**
 - [जेनेरिक दवाइयाँ:](#) भारत विश्व का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है, जो वैश्विक मांग का 20% पूरा करता है।
 - [सक्रिय फार्मास्यूटिकल सामग्री \(API\):](#) भारत 500 से अधिक API का उत्पादन करता है, जो वैश्विक API बाज़ार में 8% का योगदान देता है।
 - [चिकित्सा उपकरण:](#) अनुमान है कि वर्ष 2030 तक यह बाज़ार 11 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 50 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो जाएगा।

■ विकास चालक:

- कम कीमत: भारतीय औषधियाँ पश्चिमी दवाओं की तुलना में काफी सस्ती हैं।
- सरकारी सहायता : [उत्पादन आधारित प्रोत्साहन \(PLI\) योजना](#) जैसी नीतियाँ घरेलू वनिरिमाण को बढ़ावा देती हैं।
- मज़बूत अनुसंधान एवं विकास आधार: भारत में नवाचार को बढ़ावा देने वाले वैज्ञानिकों और इंजीनियरों का एक बड़ा समूह है, उदाहरण के लिये, वर्ष 2023 में 64,480 पेटेंट फाइलिंग के साथ भारत अब पेटेंट आवेदनों के मामले में विश्व स्तर पर 6 वें स्थान पर है।
- बढ़ती वैश्विक मांग: बढ़ती चरिकालिक बीमारियाँ और वृद्ध होती वैश्विक जनसंख्या, लागत प्रभावी औषधियों की मांग को बढ़ा रही हैं।

■ नरियात: भारत 200 से अधिक देशों को दवाइयों का नरियात करता है। वतित वर्ष 24 में नरियात 27.82 बलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया।

- बायोसमिलर और विशेष दवाओं की बढ़ती मांग के कारण भारत चकितिसा उपकरणों के नरियात में विश्व स्तर पर 12वें स्थान पर है।

■ सरकारी पहल: [उत्पादन लकिड प्रोत्साहन योजना \(PLI\)](#), [बलक डरग पार्क योजना](#), [राष्ट्रीय चकितिसा उपकरण नीति 2023](#)।

नोट: API कसिी दवा में मौजूद जैविक रूप से सकरयि घटक होते हैं जसिसे इच्छति चकितिसीय लाभ मलिते हैं। ये कसिी चकितिसा स्थति के उपचार या प्रबंधन हेतु ज़मिमेदार प्रमुख तत्त्व होते हैं।

फार्मा उद्योग को कनि चुनौतियों का सामना करना पड रहा है?

- गुणवत्ता संबंधी मुद्दे: वर्ष 2022 में गाम्बयिा में भारतीय कफ सरिप से हुई मौतों जैसी घटनाओं के कारण भारतीय दवाओं की गुणवत्ता पर चतिाँ उत्पन्न हुई हैं।
- नयिमक बाधाएँ: वकिसति हो रहे [गुड मैनयुफैक्चरिग प्रैक्टिसि \(GMP\)](#) एवं गुणवत्ता नयितरण वनियिमों का अनुपालन महंगा है।
- API आयात पर नरिभरता: भारत 70% API का आयात (मुख्य रूप से चीन से) करता है जसिसे आपूरत शृंखला संबंधी कमज़ोरयिाँ पैदा होती हैं।
- मूल्य नरिधारण दबाव: [आवश्यक दवाओं की राष्ट्रीय सूची \(NLEM\)](#) के अंतरगत मूल्य नयितरण से फार्मा कंपनयिों की लाभप्रदता प्रभावति होती है, जसिसे उद्योग के नवाचार प्रोत्साहन में बाधा उत्पन्न होती है।
- वैश्विक प्रतसिपर्द्धा: चीन, अमेरिका और यूरोपीय संघ (अत्यधिक परिष्कृत और अच्ची तरह से शोध कयिे गए उत्पाद) से प्रतसिपर्द्धा बढ़ रही है जबकि वयितनाम एवं इंडोनेशयिा वनिरिमाण केंद्र के रूप में उभर रहे हैं।
- कौशल की कमी: जैव प्रोद्योगकिी, बायोसमिलर और दवा संबंधी रसिर्च में प्रशकिसति पेशेवरों की कमी है।
 - उदाहरण के लयिे, नवीन फारमूलों के बजाय जेनरिक दवाओं पर नरिभरता से वैश्विक प्रतसिपर्द्धात्मकता प्रभावति होती है।

आगे की राह

- घरेलू API वनिरिमाण: PLI 2.0, बलक डरग पार्क, कणिवन-आधारित API एवं ग्रीन केमसि्ट्री से API उत्पादन में मज़बूती आने के साथ आत्मनरिभरता और आपूरत स्थरिता सुनश्चिति हो सकती है।
- उच्च मूल्य वाली दवा बाज़ारों का वसितार: भारतीय कंपनयिों को बढ़ते विशिष्ट चकितिसा अवसरों का लाभ उठाने के क्रम में [जीन थेरेपी](#), व्यक्तगित चकितिसा तथा [mRNA](#) और अगली पीढी के टीकों में अनुसंधान एवं विकास का वसितार करना चाहयिे।
- अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देना: कर लाभ, अनुसंधान अनुदान, सार्वजनिक-नजी भागीदारी (PPP), AI-संचालित औषधि नवाचार, नैदानिक परीक्षणों में बगि डेटा तथा टेलीमेडसिनि के माध्यम से अनुसंधान और विकास को प्रोत्साहन मलिते के साथ नवाचार को बढ़ावा मलिंगा।
- वनियिमक एवं गुणवत्ता अनुपालन: बायोसमिलर, नवीन औषधयिाँ तथा सफल उपचारों के तीव्र अनुमोदन से बाज़ार में इनकी उपलब्धता में सुधार होगा।
 - दवा सुरक्षा नगिरानी बढ़ाने से उपभोक्ता विश्वास एवं नयिमक विश्वसनीयता बढ़ेगी।
- वैश्विक बाज़ार में प्रवेश: व्यापार सौदों तथा वदिशी वनिरिमाण के माध्यम से अफ्रीका, लैटिन अमेरिका एवं [आसयिान](#) को नरियात का वसितार करने से व्यापार बाधाएँ दूर होंगी तथा विकास को बढ़ावा मलिंगा।

नषिकर्ष

भारत के दवा उद्योग में नरियात, सामर्थ्य और सरकारी सहायता के माध्यम से विकास की व्यापक संभावनाएँ हैं। हालांकि, इसमें API नरिभरता, वनियिमक बाधाओं और वैश्विक प्रतसिपर्द्धा जैसी चुनौतियों का समाधान कयिा जाना चाहयिे। अनुसंधान एवं विकास, घरेलू API उत्पादन एवं वैश्विक बाज़ार में उपस्थति को मज़बूत करने से वैश्विक दवा क्षेत्र में भारत का नरितर नेतृत्व सुनश्चिति होगा।

दृष्टि मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: 'विश्व की फार्मेसी' के रूप में भारत की भूमिका का मूल्यांकन कीजयिे। इसमें योगदान देने वाले कारकों को बताते हुए इस क्षेत्र से संबंधति चुनौतियों पर प्रकाश डालयिे?

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न1. नमिनलखिति में से कौन-से, भारत में सूक्ष्मजैविक रोगजनकों में बहु-औषध प्रतिरोध के होने के कारण हैं? (2019)

1. कुछ व्यक्तियों में आनुवंशिक पूर्ववृत्ति (जेनेटिक प्रीडिस्पोज़ीशन) का होना ।
2. रोगों के उपचार के लिये वैज्ञानिकों (एंटीबायोटिक्स) की गलत खुराकें लेना ।
3. पशुधन फार्मगि प्रतिजैविकों का इस्तेमाल करना ।
4. कुछ व्यक्तियों में चरिकालिक रोगों की बहुलता होना ।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1, 3 और 4
- (d) केवल 2, 3 और 4

उत्तर: (b)

??????

Q. भारत सरकार दवा कंपनियों द्वारा दवा के पारंपरिक ज्ञान को पेटेंट कराने से कैसे बचाव कर रही है? (2019)

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/india-s-pharma-industry>

